प्रकाशनार्थ

कार्ल मार्क्स पर सम्मेलन - दिन-2

पटना, 17 जून। जोन रॉबिंसन स्मारक व्याख्यान देते हुए आद्री के अध्यक्ष तथा जेएनयू, नई दिल्ली के सेवानिवृत्त प्रोफेसर अंजन मुखर्जी ने रविवार को कहा कि सूचनाओं के प्रवाह ने श्रमिक वर्ग में अधिक मजदूरी के लिए काफी आशा पैदा की है। इसके कारण सत्ता की ओर से अधिक दमनकारी उपाय भी किए गए हैं। जीवन निर्वाहमूलक मजदूरी की अवधारणा का मार्क्स सिद्धांतों में उल्लेख किया भी गया था। लेकिन रेडियो, टेलीविजन और अभी सोशल मीडिया के उद्‌भव से सूचना के बढ़े प्रवाह ने श्रमिक वर्ग की आकांक्षाओं को बढ़ाया है जो अब उस अधिक वेतन के जरिए सुख-सुविधा के आधुनिक सामान हासिल करना चाहते हैं। इसके कारण दिहाड़ी श्रमशक्ति की मांगों के प्रति सहानुभूतिपूर्ण होने के बजाय शासन अधिक दमनकारी हो गया है। प्रोफेसर मुखर्जी के व्याख्यान का शीर्षक था - मार्क्सवादी अर्थशास्त्र : नवशास्त्रीय दृष्टिकोण से टिप्पणियां।

यह आद्री द्वारा यहां कार्ल मार्क्स पर आयोजित पांच-दिवसीय सम्मेलन में होने वाले 37 व्याख्यानों में से सातवां व्याख्यान था। सम्मेलन का आरंभ शनिवार को हुआ।

अमेरिका के मोरहाउस कॉलेज, एटलांटा के एसोसिएट प्रोफेसर क्रिप्टन जेंसन ने अपने डी.डी. कौशांबी स्मारक व्याख्यान का आरंभ 1959 में मार्टिन लूथर किंग द्वारा भारत की अपनी यात्रा के संबंध में दिए गए वक्तव्य को उद्धृत करते हुए किया कि "अन्य देशों में मैं पर्यटक के रूप में जाता हूं, लेकिन भारत में मैं तीर्थयात्री के रूप में जाता हूं।" अश्वेत लोगों के अधिकारों के योद्धा मार्टिन ने यह बात स्पष्टत: महात्मा गांधी के प्रति अपनी श्रद्धा प्रकट करते हुए कही थी।

प्रो. जेंसन के व्याख्यान का शीर्षक 'अमेरिका में अश्वेत मार्क्सवाद का इतिहास' था। यह कहते हुए कि गुलामी के संकट ने यूरोप की आर्थिक शक्ति में वृद्धि कर दी, उन्होंने अमेरिका में मार्क्सवाद की 150 वर्ष की यात्रा को विभिन्न काल खंडों के जरिए व्यक्त किया - 1968 में पुनर्निर्माण काल, उसके बाद जन युद्ध, 1918 में समाजवादी दल का उभार, 1968 में गरीब लोगों का अभियान और उसके बाद मार्टिन लूथर किंग की हत्या, तथा विद्वानों द्वारा 2018 में वर्तमान भूराजनीतिक दौर का आशय बताने के लिए मार्क्सवाद का उपयोग। अमेरिका के

अश्वेतों और भारत के अछूतों के बीच समानता की ओर ध्यान आकर्षित करते हुए उन्होंने कहा कि अपने वैध अधिकारों के लिहाज से अश्वेत अभी भी काफी कुछ हासिल नहीं कर पाए हैं।

पूर्व के एक सत्र में दिल्ली के हिंदू कॉलेज के एसोसिएट प्रोफेसर ईश मिश्रा ने कहा कि बुर्जुआ लोकतांत्रिक क्रांति के अपूर्ण कार्यभार को पूरा करने में भारतीय साम्यवादियों की असफलता बाद में पहचान आधारित राजनीति में वृद्धि का कारण बन गई। उन्होंने कहा कि भारत के वर्तमान राजनीतिक परिदृश्य में सामाजिक न्याय समूहों के एक हिस्से द्वारा अपनी मुक्ति के प्रयास में श्रमिकों, किसानों, दलितों, आदिवासियों और अन्य लोगों में वर्ग चेतना के प्रसार के जरिए जातिगत पहचान पर दिया गया जोर सांप्रदायिक ताकतों द्वारा धार्मिक पहचान पर जोर की राह में बड़ी बाधा है।

अन्य प्रमुख वक्ताओं में 'सोवियत में पूर्वी देशों के मार्क्सवादी अध्ययन का उद्‌भव और स्टालिनवादी विरूपण' शीर्षक फ्रेडरिक एंजेल्स स्मारक व्याख्यान देने वाले यूके के शेफील्ड विश्वविद्यालय के प्रोफेसर क्रेग शामिल थे। रिकार्डो बेलीफियोर ने 'क्या मार्क्स पर जीवन है? पूंजीवादी उत्पादन के वृहद-मौद्रिक सिद्धांत के बतौर राजनीतिक अर्थशास्त्र की आलोचना' विषयक मॉरिस डॉब स्मारक व्याख्यान दिया। वहीं ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय की सेवानिवृत्त प्रोफेसर बारबरा हैरिस ह्वाइट ने 'वैश्वीकरण के दौर में विज्ञान और नीति' विषयक ऑटो न्यूराथ स्मारक व्याख्यान दिया।

अपना आलेख 'क्रांति, मुक्ति और सामाजिक पुनरुत्पादन' प्रस्तुत करते हुए जेएनयू की एसोसिएट प्रोफेसर चिरश्री दासगुप्ता ने निष्कर्ष प्रस्तुत किया कि सामाजिक पुनरुत्पादन के समतावाद के बजाय उत्पादक शक्तियों के विकास व्यापक रूपांतरण का फोकस मानना क्रांतिकारी प्रक्रिया के उद्देश्यों को पीछे धकेल सकता है।

पांच-दिवसीय सम्मेलन के दूसरे दिन सात व्याख्यान दिए गए और चार आलेख प्रस्तुत किए गए। शनिवार को सम्मेलन के आरंभ के दिन छः व्याख्यान दिए गए थे और चार आलेख प्रस्तुत हुए थे। बुधवार को सम्मेलन की समाप्ति तक कुल 17 आलेख प्रस्तुत होंगे ओर 37 स्मारक व्याख्यान दिए जाएंगे।

(अंजनी कुमार वर्मा)

ASIAN DEVELOPMENT RESEARCH INSTITUTE
BSIDC Colony, Off Boring-Patliputra Road, Patna - 800 013, Tel. : 0612-2575649, Fax : 0612-2577102
E-mail : adripatna@adriindia.org / adri_patna@hotmail.com, Website : www.adriindia.org